ऋचा वर्मा

# भारतीय सफर पर एक नज़र

भारत का पहला राष्ट्रीय पार्क बनाने का काम वन अधिनियम 1878 के तहत हिमालय क्षेत्र में स्थित वन क्षेत्रों को आरक्षित घोषित करने के बाद 1879 में शुरू हुआ।

ब्रिटिश सरकार ने 1936 में ब्रिटिश शिकारी जिम कॉर्बेट की सलाह पर संयुक्त प्रांत (वर्तमान उत्तर प्रदेश) के आरक्षित वनों का नाम हेली नेशनल पार्क रखा। बाद में जिम कॉर्बेट संरक्षणकर्त्ता के रूप में प्रसिद्ध हुए। पार्क का नामकरण तत्कालीन उत्तर प्रदेश के गवर्नर सर मैलकॅम हेली के नाम पर किया गया।

1952 में पार्क के ज़्यादातर हिस्से से बहने वाली रामगंगा नदी के नाम पर इसका नाम रामगंगा नेशनल पार्क रखा गया। पांच वर्ष बाद एक बार फिर इसका नाम बदल कर इसे जिम कॉर्बेट राष्ट्रीय प्राणी उद्यान (जिम कार्बेट नेशनल पार्क) रख दिया गया। आज यह भारत का सबसे सफल बाघ क्षेत्र है।

हिमालय क्षेत्र में 520 से अधिक वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में फैला यह पार्क उत्तराखंड में स्थित है। यों तो यह कार्बेट पार्क बाघों के लिए प्रसिद्ध है, लेकिन यहां अन्य अनेक पशु-पक्षियों जैसे जंगली हाथी, हिरनों की कई प्रजातियां, रीछ, घड़ियाल, खंजन, स्टॉर्क तथा झक सफेद बगुले भी पाए जाते हैं।

1973 का वर्ष इस पार्क के लिए ही नहीं बल्कि बाघों के संरक्षण के लिए भी महत्वपूर्ण वर्ष रहा क्योंकि 1972 में पहली बार अखिल भारतीय स्तर पर बाघों की संख्या का आकलन करने के बाद ही बाघों के संरक्षण के लिए एक महत्वाकांक्षी परियोजना प्रारंभ की गई। इस सर्वेक्षण से पता चला कि बीसवीं सदी की शुरुआत में जहां बाघों की अनुमानित संख्या 40,000 थी, वह अब घटकर 1,827 रह गई है।

इसके साथ ही बाघों के शिकार पर देश भर में पाबंदी लगा दी गई और परियोजना के शुभारंभ के लिए कॉर्बेट नेशनल पार्क को चुना गया। भारत ने समय-समय पर वन्य जीवों के संरक्षण के लिए अमेरिका सहित कई अन्य देशों से भी सहायता ली है।

अमेरिकी मत्स्य तथा वन्य जीव सेवा (http://www.fws.gov/) ने उत्तराखंड में देहरादून स्थित भारतीय वन्य जीव संस्थान के सहयोग से कॉर्बेट पार्क में प्रबंधन से संबद्ध दो अहम अनुसंधान परियोजनाओं के लिए वित्तीय सहायता प्रदान की है।

इनमें से पहली परियोजना उत्तराखंड के कॉर्बेट तथा राजाजी नेशनल पार्कों के बड़े शाकाहारी प्राणियों, उनके प्राकृतिक निवास स्थानों तथा मानव के आपसी संबंधों पर थी। इसके तहत 1995-2000 में राजाजी तथा कॉर्बेट पार्कों को जोड़ने वाले वन्य मार्गों की वनस्पतियों, स्थान बदलने यानी माइग्रेशन के तौर-तरीकों, जैव दबाव, मानव तथा वन्य जीवों के टकराव और अवैध शिकार का अध्ययन किया गया।

**भारत में 96 राष्ट्रीय उद्यान हैं। मध्य प्रदेश और अंडमान एवं निकोबार द्वीप समूह में से प्रत्येक में नौ राष्ट्रीय उद्यान हैं।**

इस अध्ययन के परिणामों से बाघों तथा हाथियों की संख्या के प्रबंधन, उस क्षेत्र में रहने वाले मनुष्यों के वैकल्पिक पुनर्वास और भावी अनुसंधान के लिए महत्वपूर्ण पारिस्थितिकीय जानकारी जुटाने में सहायता मिली।

अमेरिका-भारत सहयोग की दूसरी परियोजना के तहत जिम कॉर्बेट पार्क और मध्य प्रदेश के पन्ना नेशनल पार्क में एक विश्लेषण केंद्र खोला गया। वर्ष 2000-2005 में इस परियोजना के अंतर्गत साइन बोर्डों, प्रदर्शन बोर्डों, व्याख्यात्मक सामग्री बनाने और पार्क के प्रबंधन से संबंधित कर्मियों की व्याख्यात्मक कुशलता बढ़ाने पर खर्च किया गया। इसमें पार्क के भ्रमण पर आने वाले व्यक्तियों के सुप्रबंधन तथा संरक्षण के बारे में स्थानीय लोगों की जागरूकता बढ़ाने का कार्य भी किया गया।

अमेरिकी मत्स्य तथा वन्य जीव सेवा ने दोनों देशों के वैज्ञानिकों के बीच आदान-प्रदान में मदद देकर इसे बढ़ावा दिया और पब्लिक लॉ 480 यानी पी एल 480 नामक भारत-अमेरिकी कार्यक्रम के अंतर्गत दोनों परियोजनाओं की अनुसंधान तथा अन्य बुनियादी ज़रूरतों की पूर्ति के लिए 2,75,000 डॉलर की आर्थिक सहायता दी।

'पी एल 480' को शांति के लिए भोजन कार्यक्रम भी कहा गया जिसके तहत विकासशील देशों की खाद्य सुरक्षा को बढ़ाने के लिए बड़े पैमाने पर अमेरिकी कृषि संसाधनों का उपयोग किया गया। बाद में, खाद्यान्नों के बदले अमेरिका को देय भारतीय रुपयों का इस्तेमाल भी वन्य जीव, विज्ञान, प्रौद्योगिकी तथा शैक्षिक परियोजनाओं में किया गया।

अमेरिकी मत्स्य तथा वन्यजीव सेवा में अपनी 'गेंडा तथा बाघ संरक्षण निधि' में से एक और परियोजना के लिए आर्थिक सहायता दी। इस परियोजना के अंतर्गत कॉर्बेट बाघ आरक्षित क्षेत्र में बाघ-मानव टकराव के अध्ययन के लिए भारतीय वन्यजीव सोसायटी को 17,594 डॉलर की आर्थिक सहायता दी गई। वर्ष 2001-2002 में की गई बाघों की गणना के अनुसार भारत में 3,642 बाघ हैं। भारतीय वन्य जीव संस्थान द्वारा विगत दो वर्षों के दौरान की गई बाघों की गणना के प्रारंभिक नतीज़ों के आधार पर भारत सरकार ने इस वर्ष मई माह में कहा कि अनेक आरक्षित क्षेत्रों में बाघों की संख्या घटने के बावजूद कॉर्बेट नेशनल पार्क में स्थिति सुखद है।

प्रारंभिक रिपोर्टों के अनुसार कार्बेट पार्क में बाघों की संख्या 112 है और वन्य जीव संरक्षकों का कहना है कि केवल मध्य प्रदेश के कान्हा पार्क सहित कॉर्बेट बाघ आरक्षित क्षेत्र ही सही मायने में भारत में दो प्रमुख 'बाघ क्षेत्र' हैं।

जहां तक कॉर्बेट पार्क की बात है, पर्यटकों के लिए अब भी यह एक बड़ा आकर्षण है, जहां हर साल 70,000 से भी अधिक पर्यटक दुर्लभ बाघ की एक झलक देखने को खिंचे चले आते हैं।

जिम कॉर्बेट नेशनल पार्क